रविवार, २० दिसम्बर, २०२०

आत्मीय पाठकगण,

कैसा वर्ष रहा यह! विश्व में जो कुछ भी घट रहा है, उसका वर्णन करने के लिए किसी भी शब्दकोश का कोई भी विशेषण पर्याप्त नहीं है। यद्यपि एक अनजान वायरस ने समस्त मानवजाति पर एकाएक घातक हमला किया है और हर एक के जीवन को उलट-पलट कर दिया है, पर इस व्यापक विपत्ति का कारण यह सचाई भी है कि हर कोई एक-दूसरे से पूर्णतः सहमत नहीं है। यहाँ तक कि हमारे परिवारीजनों और प्रियजनों के बीच भी हर व्यक्ति के विचार इस विषय में भिन्न-भिन्न हैं कि जिस महामारी ने कई जीवन बरबाद कर दिए हैं, उसके साथ वास्तव में क्या हो रहा है।

तथापि, सिद्धयोगी होने के नाते, हम सब एक बात निश्चित रूप से जानते हैं कि हम इस विश्व को एक बेहतर स्वर्ग बनाने के प्रति समर्पित हैं। यही बात हमारी श्रीगुरु, गुरुमाई चिद्विलासानन्द हमें बारम्बार सिखाती रही हैं। और हम इसे वास्तविकता में किस तरह बदलेंगे? इसका एक तरीक़ा है, सिद्धयोग साधना के अनुशासनों का पालन करते रहना।

कल हुए, 'शान्त-रस के साथ संलग्न होना' सत्संग में, शिक्षक स्वामी ईश्वरानन्द ने कहा था : अगले वर्ष फिर मिलेंगे! स्वामी जी ने ऐसा इसलिए कहा था क्योंकि कल का सत्संग, वर्ष २०२० के सीधे वीडिओ प्रसारणों का समापन कार्यक्रम था।

इसे ध्यान में रखते हुए, हम, 'शान्त-रस के साथ संलग्न होना', इन सत्संगों की निदेशक-टीम, एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन व साथ ही सार्वभौमिक सिद्धयोग संघम् के हर एक सदस्य को अपना हार्दिक धन्यवाद देना चाहते हैं, जिन्होंने दिसम्बर माह में आयोजित सीधे वीडिओ प्रसारणों के निर्माण में सहायता की है। हमारे इतिहास के इस सर्वाधिक कष्टकारी समय में इन सत्संगों में हमारा सेवा अर्पित करना और आप सबका भाग लेना कितना आशीर्वादपूर्ण रहा।

हम जानते हैं कि सिद्धयोग वैश्विक हॉल में हुए इन सत्संगों में आपने पूर्ण हृदय से सिखावनियों के बारे में कितना कुछ सीखा व अध्ययन किया है। हम यह भी जानते हैं कि आपने जो सीखा है, उसका अनुपालन करने हेतु आपने प्रयास किए हैं। कैसे जानते हैं हम यह? क्योंकि, उदाहरण के लिए, आपने अपने अनुभव लिखकर उन्हें सिद्धयोग पथ की वेबसाइट को भेजे हैं।

हम उनमें से कुछ अनुभव बताना चाहेंगे जिन्होंने हमारे हृदय को छू लिया।

'शान्त-रस के साथ संलग्न होना' के पहले सत्संग, 'श्वास-प्रश्वास की शक्ति' के बाद, भारत के एक सिद्धयोगी ने लिखा : "मैंने शान्त-रस पर अमी बन्सल की व्याख्या बड़े ध्यान से सुनी और मुझे

महसूस हुआ कि वे शब्द मेरे अन्तर में मानो फूलों की तरह खिल रहे हैं और मुझे सहज व सतर्क बना रहे हैं।"

'शान्त-रस के साथ संलग्न होना' के दूसरे सत्संग, 'नामसंकीर्तन की शक्ति'—जिसकी शिक्षक सरोज डेल ड्यूका थीं—के बाद मॅसाच्यूसेट्स्, अमरीका से एक सिद्धयोगी ने लिखा : "मेरी यह प्रार्थना है कि हम सब को अपने जीवन में नामसंकीर्तन की शक्ति व सौन्दर्य को जीवन्त रखने और उसे बढ़ने देने के लिए रचनात्मक तरीक़े खोजने हेतु प्रेरणा मिले।"

'शान्त-रस के साथ संलग्न होना' के तीसरे सत्संग, 'ध्यान की शक्ति'—जिसके शिक्षक थे, पेद्रो सा मोरायस—के बाद, अमरीका के हवाई से एक सिद्धयोगी ने कहा : "इस सत्संग में संलग्न होना कितना मधुर और शक्तिपूर्ण था। ध्यान करते समय, अन्तर की निस्तब्धता और बाहर की निस्तब्धता पर केन्द्रण करने से मुझे शान्ति के अपने अनुभव में दृढ़ता महसूस हुई। विश्वभर में हम सब एक-साथ, एक ही समय पर ध्यान कर रहे थे, इस बात की मधुरता का मैंने अनुभव किया, मानो हम दिव्य प्रेम और शान्ति के, श्रीगुरु के प्रकाश-स्तम्भ थे—एक मनोहर अनुभव!"

'शान्त-रस के साथ संलग्न होना' के चौथे सत्संग, 'पूजा की शक्ति'—जिसकी शिक्षक लावण्या माविल्लापल्ली थीं—के बाद अमरीका के कैलिफ़ोर्निया से एक सिद्धयोगी ने लिखा : " 'पूजा की शक्ति' में भाग लेने के बाद मैंने महसूस किया कि मैं अन्तर में गहरे उतर गई हूँ।"

'शान्त-रस के साथ संलग्न होना' के पाँचवें सत्संग, 'कहानियों की शक्ति'—जिसकी शिक्षक इसाबेल एन्डरसन थीं—के बाद अमरीका के कैलिफ़ोर्निया से एक सिद्धयोगी ने लिखा : "सत्संग के दौरान जब मैंने अपनी कहानी लिखी तो मुझे एहसास हुआ कि यह मेरा ही निर्णय होगा कि कहानी का समापन कैसे हो। यह मुझ पर निर्भर है कि जिस दृष्टिकोण से देखकर मैं घटनाओं का वर्णन करूँ, उसे मैं ही परिभाषित करूँ। यह मुझ पर निर्भर है कि मैं कहानी में स्वयं के और दूसरों के बारे में कैसा महसूस करता हूँ। यह मेरा निर्णय होगा कि मैं किस चीज़ पर केन्द्रण करूँ। मैं समझ गया कि जो मैं अपने संसार में देखता और अनुभव करता हूँ, इसके बारे में निरन्तर स्वयं को ही कहानियाँ सुनाता जा रहा हूँ। अपने जीवन के ताने-बाने को मैं इसी तरह बुनता हूँ! अब मैं देख सकता हूँ कि चाहे मैं जीवन में जटिल अनुभवों से ही क्यों न गुजरूँ, मुझमें वह शक्ति है कि मैं जीवन के लिए सराहना व प्रेम से भरी उज्ज्वल तथा आशावादी कहानियाँ लिख सकूँ। ये कहानियाँ भ्रम नहीं हैं, ये आशा हैं। और जहाँ आशा के लिए जगह है, वहाँ मुस्कराहट की गुंजाइश भी है।"

'शान्त-रस के साथ संलग्न होना' के छठे सत्संग, 'मौन की शक्ति'—जिसके शिक्षक स्वामी ईश्वरानन्द थे—के बाद भारत के एक सिद्धयोगी ने कहा : "मैंने अपने माता-पिता के साथ सत्संग में भाग लिया और सत्संग के बाद हम सबने निस्तब्धता का अनुभव किया। जब स्वामी जी ने शम व दम

का अर्थ समझाया, तो मेरे मन में कुछ विचार उठ रहे थे और विलीन हो रहे थे। तब, विचारों के बीच एक क्षण में मैंने देखा कि वहाँ बड़े बाबा खड़े हैं। मेरा मन शान्त व स्थिर हो गया, मैंने निस्तब्धता व प्रशान्ति का अनुभव किया और स्वयं को प्रकाश से पूरित देखा।"

आप जैसे सिद्धयोगियों से प्राप्त एक-दो और अनुभव हम बताना चाहते हैं जिन्हें पढ़कर हमें आनन्द आया। इन सिद्धयोगियों ने 'शान्त-रस के साथ संलग्न होना' सत्संगों की शृंखला पर और इस वर्ष २०२० में आयोजित सभी सीधे प्रसारित वीडिओ कार्यक्रमों पर अपने मनन और अपनी कृतज्ञता व्यक्त की है।

केनिया के एक सिद्धयोगी ने लिखा, " 'शान्त-रस के साथ संलग्न होना' सत्संगों की शृंखला, वर्ष २०२० के लिए श्रीगुरुमाई के सन्देश, 'आत्मा की प्रशान्ति' के हमारे अध्ययन के समापन का एक अत्यन्त अद्‌भुत तरीक़ा रहा है। इन सत्संगों में, श्रीगुरुमाई ने हमें अन्तर के उस मधुर, शान्तिपूर्ण स्थान को अंगीकार करने के छः विभिन्न तरीक़े प्रदान किए हैं, चाहे दुनिया में कुछ भी घटित हो रहा हो।"

और, अमरीका के मॅसाच्यूसेट्‌स् से एक सिद्धयोगी ने बताया, "मुझे 'मौन की शक्ति' सत्संग के बाद बहुत शान्ति का अनुभव हो रहा है। मेरा मन स्थिरता महसूस कर रहा है। इस सत्संग के लिए और, मुझे व हम सभी को इतनी उदारता से, इस वर्ष जो प्रदान किया गया है, उस सबके लिए मैं बहुत कृतज्ञता अनुभव कर रहा हूँ। यह शाम पूर्णाहुति जैसी लग रही है, ऐसे वर्ष की पूर्णाहुति जो हर दृष्टि से एकदम हटकर था। मेरे लिए वर्ष २०२०, वैश्विक महामारी के कारण असामान्य था किन्तु विशिष्ट भी था, क्योंकि प्रत्येक सत्संग से और सिद्धयोग पथ वेबसाइट पर प्रकाशित हर पोस्ट से मुझे प्रचुर सम्पदा प्राप्त हुई है। मैं ख़ुद को बहुत भाग्यशाली महसूस करता हूँ कि मैं सिद्धयोग पथ पर चल रहा हूँ और श्रीगुरुमाई मेरी मार्गदर्शक हैं। मैं निश्चित तौर पर जानता हूँ कि वे मुझसे प्रेम करती हैं। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि आज शाम दर्शन के दौरान बड़े बाबा की मधुर, मौन मुस्कान के माध्यम से मैंने श्रीगुरुमाई को मुस्कराते हुए, अपना प्रेम बरसाते हुए अनुभव किया। मेरे मन में केवल यही शब्द आ रहा है : *धन्यवाद।*"

हमें आशा है कि इस वर्ष सीधे वीडिओ प्रसारण कार्यक्रमों के बाद सिद्धयोग पथ वेबसाइट पर प्रकाशित कई अनुभवों को पढ़ने से आपको भी प्रोत्साहन मिलेगा और सान्त्वना भी। उन्हें पढ़कर हम सेवा अर्पित करने और सिद्धयोग साधना को सुदृढ़ करने के प्रति और भी अधिक प्रेरित महसूस करते हैं। अनुभवों को पढ़ना, सिद्धयोग संघम् से हमारे जुड़ाव की पुष्टि भी करता है—सिद्धयोगियों के संघम् से जो साधना के प्रति और इस संसार को एक बेहतर स्वर्ग बनाने के प्रति गम्भीर है। हम सब मिलकर श्रीगुरुमाई की इच्छा की परिपूर्ति करने और इसे एक वास्तविक रूप देने की आकांक्षा रखते हैं।

हाल ही में हमारा ध्यान एक ऐसी चीज़ की ओर गया जिसके बारे में श्रीगुरुमाई ने अकसर सिखाया है—और वह है, संस्कृत शब्द 'सिंहावलोकन'। यह शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है : 'सिंह' तथा 'अवलोकन'। 'सिंह अर्थात् 'शेर' और 'अवलोकन' अर्थात् 'निरीक्षण,' 'छानबीन,' 'जानना-समझना,' और 'ज्ञान।'

'सिंहावलोकन', शब्द से तात्पर्य है सिंह की मुद्रा व उसकी गतिशीलता से। जब एक सिंह चल रहा होता है, तब आगे की ओर बढ़ने के साथ-साथ वह पीछे भी देखता रहता है; वह अपने पीछे व हर तरफ़, हर चीज का निरीक्षण करते हुए चलता है, ध्यान से यह देखते हुए कि उसके चारों तरफ़ क्या हो रहा है। एक सिंह की जागरूकता ३६० डिग्री या अंश की होती है।

इसी प्रकार, २०२१ की ओर बढ़ते हुए, वर्ष २०२० में हमने जो सीखा है और अध्ययन किया है, हमारे साथ जो कुछ भी घटित हुआ है और हम उसके साथ किस तरह कार्य कर रहे हैं, उस सबको हम याद रखें। सिद्धयोग पथ पर हम श्रीगुरुमाई के मार्गदर्शन को ध्यान में रखते हैं और हर समय को भगवान का समय मानते हैं।

आदर सहित,

कार्लोस डेल क्वेटो
[निदेशक टीम की ओर से]
एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।